



# उ०प्र० कृषि अनुसंधान परिषद

## U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ-226005  
Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 1855 / एनआरएम / डब्ल्यूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021

दिनांक: 08.01.2026

दिनांक : 08 जनवरी, 2026  
समय : 12:00 बजे  
स्थान : उपकार सभाकक्ष  
उपस्थिति : संलग्न

### मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की बीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियों

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025-26 की बीसवीं बैठक डा. राजर्षि कुमार गौड़, उप महानिदेशक (आर.पी.एम.सी.), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 08 जनवरी, 2026 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के पूर्व मौसम वैज्ञानिक तथा सह-प्राध्यापक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर एवं मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान; पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग; वन विभाग; मत्स्य विभाग; कृषि विभाग; उद्यान विभाग; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया।

उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के पूर्व गेहूँ प्रजनक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिक; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के दलहन वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के तकनीकी अधिकारी (ग्रा.कृ.मौ.से.); केन्द्रीय मूदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ; केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

#### प्रथम सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (09 से 15 जनवरी, 2026)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार सप्ताह के आरंभिक 3 दिनों के दौरान तापमान में बढ़ोत्तरी होने तथा उसके बाद गिरावट आने की संभावना के दृष्टिगत प्रदेश के भाभर तराई, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री. से.) कम जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से (02 से 04 डिग्री. से.) कम रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 16 से 18 डिग्री. से., भाभर तराई एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री. से., बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में यह 22 से 24 डिग्री. से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 20 से 22 डिग्री. से. रहने की संभावना है। सप्ताह के आरंभिक 3 दिनों के दौरान तापमान में बढ़ोत्तरी होने तथा उसके बाद गिरावट आने की संभावना के दृष्टिगत उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य या सामान्य से (01 से 02 डिग्री. से.) कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से (02 से 04 डिग्री. से.) कम रहने की संभावना है। प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री. से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 04 से 06 डिग्री. से. रहने की संभावना है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में मौसम पूर्णतया शुष्क रहने की संभावना है।

#### द्वितीय सप्ताह का मौसम दृष्टिकोण (16 से 22 जनवरी, 2026)

प्रदेश के भाभर तराई, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग तथा उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री. से.) कम जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री. से.) अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री. से., बुंदेलखंड

एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में यह 22 से 25 डिग्री. से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 20 से 22 डिग्री. से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा उत्तर-पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के कुछ भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री. से.) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (01 से 02 डिग्री. से.) कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 04 से 06 डिग्री. से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 06 से 08 डिग्री. से. रहने की संभावना है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है।

**मौसम चेतावनी:** रात से सुबह तक सापेक्षिक आर्द्रता 80 प्रतिशत से अधिक रहने की संभावना के दृष्टिगत प्रदेश में कोहरे के घनत्व में कमी आने के बावजूद उत्तरी तराई भाग में कहीं कहीं घने कोहरे के साथ अन्य भागों में देर रात/सुबह के समय छिछला से मध्यम कोहरा पड़ने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा उपलब्ध कराये गये दिनांक 07 जनवरी, 2026 तक के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 138.78 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 139.14 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 100.48 प्रतिशत है। गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 95.19 लाख हे. के सापेक्ष 96.36 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 101.23 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 2.00 लाख हे. के सापेक्ष 2.04 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 102.36 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.36 लाख के सापेक्ष 0.43 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 119.82 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 6.90 लाख हे. के सापेक्ष 6.86 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.47 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 4.00 लाख हे. के सापेक्ष 3.78 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 94.51 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 6.64 लाख हे. के सापेक्ष 6.60 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.53 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 5.00 लाख हे. के सापेक्ष 4.95 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 99.09 प्रतिशत है जबकि राई-सरसों के 18.23 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 18.01 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 98.81 प्रतिशत है। अलसी के 0.46 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.39 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 86.00 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- वर्तमान में गेहूँ की केवल अतिविलम्ब से बोई जाने वाली किस्मों का समय है अतः बुवाई हेतु अतिविलम्ब से बोई जाने वाली संस्तुत किस्मों का ही चयन करें तथा बुवाई 15 जनवरी तक पूर्ण कर लें।
- आलू की फसल में पछेती झुलसा बीमारी के रोकथाम हेतु मैन्कोजैब/प्रोपीनेब/कार्बेन्डाजिम युक्त फफूंदनाशी 2.0-2.5 किग्रा/10 दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है, उनमें किसी भी फफूंदनाशक-साईमोक्सेनिल 8 प्रतिशत मैन्कोजैब 64 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. का 2-2.5 किलोग्राम दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर 15-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- नये लगाये गये पौधों या 1-2 साल पुराने बागों में कम तापमान से होने वाली क्षति से बचाव हेतु पौधों को फूस/घास से ढकना (थैचिंग) चाहिए और प्रक्षेत्र मृदा में नमी बनाये रखना चाहिए इससे पाले से क्षति होने की सम्भावना कम रहेगी।
- उत्तर प्रदेश वन विभाग के अन्तर्गत गोरखपुर, बरेली, लखनऊ, मेरठ, मुरादाबाद, सहारनपुर, देवीपाटन, अयोध्या, झांसी, मिर्जापुर, कानपुर, वाराणसी एवं अलीगढ़ मण्डलों में कार्बन फाइनेन्स प्रोजेक्ट के अधीन कृषकों के पंजीकरण जारी है, इस सम्बन्ध में कृषकों द्वारा सम्बन्धित प्रभागीय वनाधिकारी/निदेशक से सम्पर्क किया जा सकता है।
- वर्तमान मौसम में पशुओं में शीत तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः पशुओं को हवादार किन्तु ठंडी एवं तेज हवा से सुरक्षित (ड्राफ्ट फ्री) आवास में रखा जाय तथा नवजात बछड़ों को अलग, अधिक गर्म एवं सुरक्षित स्थान पर विशेष देखभाल के साथ रखा जाय।
- वर्तमान में मछलियों में वृद्धि दर कम होती है अतः पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 प्रतिशत तक ही किया जाय।

## गेहूँ की खेती

- गेहूँ की अति पछेती बुवाई के लिये क्षेत्रीय संस्तुत किस्मों यथा पी.बी.डब्ल्यू.-833, एच.डी.-3271, एच.आई. 1621, के. 7903 (हलना) एवं के. 9423 (उन्नत हलना) आदि की बुवाई 15 जनवरी तक कर दें।

- अति विलम्ब से गेहूँ की बुवाई करने पर गेहूँ की बीजदर सामान्य से 25 प्रतिशत (125 कि.ग्रा./हे.) बढ़ाकर बुवाई करें तथा अति विलम्ब से ही बोई जाने वाली किस्मों का चयन करें।
- गेहूँ की बुवाई के 20–30 दिन के मध्य पहली सिंचाई के आस-पास पौधों में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होते हैं। लक्षण दिखाई देने पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 16 किग्रा. यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़कें। यूरिया के स्थान पर 2.5 किग्रा. बुझे हुए चूने के पानी (2.5 किग्रा. बुझे चूने को 10 लीटर पानी में सायंकाल भिगोकर दूसरे दिन पानी निथार कर पानी) का प्रयोग करें अथवा हैलो-जिंक नामक उत्पाद का भी प्रयोग कर सकते हैं, इसे प्राप्त करने के लिये कृषक केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान से सम्पर्क कर सकते हैं।
- समय से बोये गये गेहूँ में प्रत्येक 20 से 25 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- गेहूँसा एवं जंगली जई आदि संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये खरपतवारनाशी पिनोक्साडेन (एक्सिल 5 ई.सी.) 1.0 ली. को 500 लीटर पानी में घोलकर अथवा सल्फोसल्फयूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्राम (2.5 यूनिट) को 300 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 किलोग्राम प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण के लिये मेटसल्फयूरॉन (एलग्रीप) 20 ग्रा. दवा को 500 ली. पानी में घोलकर अथवा कार्फेन्ट्राजोन (एफीनीटि) 50 ग्रा. दवा को 500 ली. पानी में घोलकर अथवा 2–4डी, सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम प्रति हे. अथवा 2–4डी मिथाइल एमाइन साल्ट 58 प्रतिशत एस.एल. की 1.25 लीटर प्रति हे. की मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30 से 35 दिन बाद छिड़काव करना चाहिये।
- संकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु पिनोक्साडेन (एक्सिल 5 ई.सी.) 1.0 ली+कार्फेन्ट्राजोन (एफीनीटि) 50 ग्रा. को 500 ली. पानी में घोलकर अथवा सल्फोसल्फयूरान 75 प्रतिशत+मेटसल्फयूरॉन मिथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.जी. 20 ग्राम 1250 मि.ली. सर्फेक्टेंट प्रति हे. अथवा मेट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 250 से 300 ग्राम मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से फ्लैटफैननॉजिल से प्रथम सिंचाई के बाद 25 से 30 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।

### जौ की खेती

- फसल की दूसरी सिंचाई दुग्धावस्था में करें।
- खरपतवारों के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों पिनोक्साडेन +मेटसल्फयूरॉन मिथाइल का प्रयोग संस्तुतिनुसार करें।

### तिलहनी फसलों की खेती

- राई/सरसों के प्रमुख कीट माहू तथा चित्रित बग के नियंत्रण हेतु ऑक्सीडेमेटॉन मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. प्रति हेक्टेयर की दर से अथवा डाईमैथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 650 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से 700–750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सफेद गेरुई एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मेटालेक्जल 4 प्रतिशत+मेंकोजेब 64 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

### दलहन की खेती

- मटर में फूल आने के समय अवश्य सिंचाई करें तथा पत्तियों, फलियों और तनों पर सफेद चूर्ण की तरह फूले बुकनी रोग (पाउडरी मिलड्यू) की रोकथाम के लिये घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 किग्रा. अथवा ट्राईडेमोफॉन 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम/हे.लगभग 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मटर में फली छेदक/फली बेधक कीट के प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फूल एवं फलियां बनते समय 5 फरोमोन ट्रेप और 2 प्रकार प्रपंच प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगायें तथा नीम के बीज आर्क (5 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।

- मटर में अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 500–600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- चने की फसल में एक सिंचाई फूल आने से पूर्व करनी चाहिये। फूल आते समय सिंचाई कदापि न करें।
- चने के खेत में यदि कटुआ कीट दिखाई दे रहे हों तो स्थान-स्थान पर बर्ड पर्चर लगायें तथा थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कई स्थानों पर घास-फूस रखें। प्रातःकाल फूस पर छिपे हुए कटुआ कीटों को इकट्ठा कर समाप्त करें तथा रासायनिक उपचार हेतु क्लोरपाईरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. की 1250 मि. ली. मात्रा को 500 से 600 पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

### **रबी मक्का की खेती**

- समय से बोई गई रबी मक्का की फसल में द्वितीय सिंचाई करें तथा उचित नमी की अवस्था में नत्रजन की एक चौथाई मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें।

### **गन्ना की खेती**

- शरदकालीन बावक गन्ने की कटाई के उपरान्त पेड़ी फसल में बेहतर फुटाव हेतु 100 कु. ताजी प्रेसमड गन्ने की लाईनों में डालकर गुड़ाई करें जिससे पेड़ी का फुटाव बेहतर होगा।
- चीनी मिलों में आपूर्ति हेतु गन्ने की कटाई जमीन की सतह से करें।
- रेडरॉट प्रभावित खेत में फसल-चक्र अपनाएं। ऐसे खेतों में पेड़ी न लें

### **सब्जियों की खेती**

- मटर की फसल में वातारण में नमी एवं कोहरे के कारण डाउनी मिल्ड्यू एवं पाउडरी मिल्ड्यू का प्रकोप होने की सम्भावना रहती है तो प्रकोप की दशा में 25 से 30 किग्रा० प्रति हे० की दर से गंधक के चूर्ण का छिड़काव करें।
- आलू में एफिड (माहू) कीट की रोकथाम हेतु लेम्डासाइहैलोथ्रिन 2.5 प्रतिशत ई.सी.1.0 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर में फूल आते समय हल्की सिंचाई करें। आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई फलियां बनते समय करनी चाहिए।
- गोभीवर्गीय फसलों में डायमंड बैक मोथ का प्रकोप होने पर क्लोरेन्टरानिलिप्रोल 0.5–1 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर का छिड़काव करें।
- टमाटर तथा मिर्च की फसल को झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/ली.) की दर से मैन्कोजेब का छिड़काव करें। फसल को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3–5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर या नीम आधारित कीट नाशकों का प्रयोग करें।
- रबी मौसम में नर्सरी में 30–45 दिन पुरानी तैयार की गयी प्याज की बेहन की रोपाई करने का उपयुक्त समय है।
- बैंगन की फसल में प्ररोह एवं फल छेदक कीट की रोकथाम के लिए ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3–5 ग्राम या फ्लूबेन्डामाइड 0.5–0.75 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर का छिड़काव करें।
- लहसुन में 200 किग्रा० कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट या 100 किग्रा यूरिया/हे० की दर से टॉप ड्रेसिंग करें। ध्यान रहे कि यूरिया का प्रयोग सिंचाई के बाद करें जबकि कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग करने के बाद सिंचाई करें।

### **बागवानी**

- छोटे पौधों को कोहरे से बचाने के लिए हल्की सिंचाई करें व उन्हें ढक कर रखें।
- आम के बागों में अगेती बौर निकल सकता है, जिस पर झुलसा रोग का प्रकोप हो सकता है। अगेती बौर को बचाने हेतु मेन्कोजेब + कार्बेन्डाजिम के 0.2 प्रतिशत घोल (2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) या ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन + टेबूकोनाजोल (25 + 50 प्रतिशत) 0.025 प्रतिशत घोल (0.25 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

- आम में अच्छी बौर प्राप्त करने हेतु एन.पी.के. मिश्रण 5 कि.ग्रा. प्रति 2000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें, यह 50 पेड़ों के लिये पर्याप्त है।
- आम के पुष्प एवं पुष्प गुच्छ मिज कीट का प्रकोप दिखाई दे तो नियंत्रण हेतु आवश्यकतानुसार डायमथोएट (30 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 2.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से स्टिकर (1 मि.ली./ली. पानी) के साथ छिड़काव करें।
- गुझिया कीट के प्रभावी नियन्त्रण हेतु संशोधित ट्री बैंडिंग तकनीक अपनाये। 50 मिलीलीटर जले हुए मोबिल तेल और 250 ग्राम पीओपी के साथ 1 किलो चिकनी मिट्टी मिलाएं और पानी डालें, इसे गूंद कर पेस्ट बना लें। साफ किए गए पेड़ के तने वाले हिस्से के बीचों बीच गोल, मिश्रित मिट्टी का पेस्ट 2-3 इंच की पट्टी के रूप में लगाएं। मिट्टी का पेस्ट अपनी जगह पर चिपक जाएगा। मिट्टी के पेस्ट के ऊपर 2-3 इंच चौड़ी पॉलीथिन शीट या सेलो टेप को इस तरह लगाएं कि मिट्टी की पट्टी बैंड के बीच में आ जाए। पॉलीथिन या सेलो टेप को दो बार कसकर लपेटें। लिपटे पॉलीथिन या सेलो टेप के निचले भाग में चिपचिपी सुतली को बांध दें। यदि कीट बौर और पत्तियों तक पहुँच गया हो तो डायमथोएट (30 प्रतिशत सक्रिय तत्व) का 1.5 मि.ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- अमरूद में शीत ऋतु के फल बन कर पकना प्रारंभ हो चुके हैं। ड्रिप प्रणाली से उर्वरकों का प्रयोग किया जा रहा है तो पानी में घुलनशील उर्वरकों को 7 दिनों के अंतराल पर प्रयोग करें। इस स्तर पर, फलों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पोटेशियम का प्रयोग 2 से 3 ग्रा. प्रति ली. पानी की दर से करें।
- जनवरी माह में पुरानी अनुत्पादक बागों पर जीर्णोद्धार अन्तर्गत विकार युक्त एवं घनी शाखाओं का कृन्तन कार्य करें तथा कृन्तित भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगायें।
- केले की फसल में एफीड की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 2.0 मिली0 रसायन को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पहले तथा तीसरे सप्ताह में छिड़काव करें।
- अमरूद की फसल में उकठा रोग की रोकथाम हेतु पौधों के थाले की मिट्टी में प्रति वर्ग मीटर 200 ग्राम नीम की खली या 500 ग्राम वर्मी कम्पोस्ट के साथ जैविक जीव नाशी (ट्राइकोडर्मा हारजियानम या टी. विरीडी या बेसिलस प्रजाति या स्यूडोमोनास प्रजाति ) 25 ग्राम मिट्टी में मिलाना चाहिए। बाग में सूत्रकृमि ग्राही अन्य फसलें नहीं उगानी चाहिए।

### पशुपालन

- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत पशुओं में एफ.एम.डी. का टीकाकरण 22.01.2026 से प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जाना प्रस्तावित है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- पशुओं को ठंड से बचाव के लिये पशुबाड़ों को चारों ओर त्रिपाल से ढकें व अधिक ठंड होने की स्थिति में अलाव की व्यवस्था करें एवं पशुबाड़ों में बिछावन को अवश्य डालें।
- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफरा हो सकता है, अफरे से बचाव के लिये बरसीम के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक तथा गुड़ का घोल बनाकर खिलायें।
- पशुबाड़े में बिछावन के रूप में पुआल/गन्ने की सूखी पत्तियों का प्रयोग करें।
- मुर्गियों के बिछावन को सूखा रखें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

### मत्स्य पालन

- तापमान अधिक गिरने (15 डिग्री सेल्सियस) एवं कोहरे की स्थिति में तालाब में किसी तरह का क्रिया-कलाप यानि भोजन, चूना, खाद, गोबर इत्यादि का प्रयोग बंद कर देना चाहिए।

- कार्प मछली वाले तालाब में ठंड के मौसम में 15 दिनों के अन्तराल पर जाल चलायें ।
- तालाब में ठंड के मौसम में प्राकृतिक भोजन (प्लैंक्टॉन) की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु प्रति सप्ताह प्रति एकड़ की दर से 25 किलोग्राम सरसों की खली, 5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 2 किलोग्राम सूक्ष्म खनिज तत्व ( मिनरल मिक्चर) पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- तालाब के मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए 15 दिनों के अन्तराल पर पी. एच. मान के अनुसार 15-20 किलोग्राम/एकड़ की दर से चूना का प्रयोग घोल कर करें।
- मछलियों को संक्रमण से बचाव के लिए प्रति एकड़ 500 ग्राम पोटेशियम परमैंगनेट या 500 एम.एल. की दर से वाटर सेनिटाईजर का प्रयोग करें।
- माह में एक बार 400 किलोग्राम गोबर/एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- बदलते मौसम में फफूँद एवं पारासाईटिक संक्रमण से मछली को बचाने हेतु 40-50 किलोग्राम/एकड़ की दर से तालाब में नमक का छिड़काव करें एवं भोजन के साथ भी 5 से 6 ग्राम/किलोग्राम भोजन के हिसाब से माह में 7 से 10 दिनों तक मछलियों को खिलाएँ।

### रेशम पालन

- कृषक/कीटपालक ई-डिस्ट्रिक्ट विभागीय यू.आर.एल. <http://sericulture.eservicesup.in> पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाणु मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें 7388305554

### वानिकी

- कार्बन फाइनेंस प्रोजेक्ट के माध्यम से कृषकों की आय में वृद्धि के लिये कृषक अपने खेतों में अधिकाधिक पौधरोपण को बढ़ावा दे, जिससे मृदा में घट रहे जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी तथा कार्बन क्रेडिट के रूप में अतिरिक्त आय भी प्राप्त होगी।
- उत्तर प्रदेश वन विभाग के अन्तर्गत 32 जनपदों (38 प्रभागों) तथा भारत सरकार सहायतित राष्ट्रीय बांस मिशन परियोजना उ0प्र0 संचालित की जा रही हैं, जिसके अन्तर्गत बाँस वृक्षारोपण को वन क्षेत्र के साथ-साथ गैर वन क्षेत्र मे बढ़ावा देने तथा इससे होने वाले लाभ पर विशेष बल दिया जा रहा है। परियोजना के अन्तर्गत कृषकों की भूमि पर बाँस वृक्षारोपण कार्य कराये जाने हेतु 50 प्रतिशत प्रोत्साहन धनराशि दिये जाने का प्राविधान किया गया है।
- बाँस आधारित शिल्प को बढ़ावा देने, बाँस क्षेत्र विकास से सम्बन्धित सभी आवश्यक तकनीक को आम जन तक पहुंचाने के लिए 06 सामान्य सुविधा केन्द्रों (CFC) की स्थापना सहारनपुर, बरेली, बहराइच, झाँसी, मिर्जापुर तथा गोरखपुर में की गयी है।
- कृषकों एवं ग्रामीणों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य सुलभ करवाये जाने एवं उनकी आय में वृद्धि हेतु जनपद/वन प्रभाग सहारनपुर, बरेली, मीरजापुर, सोनभद्र तथा ओबरा में बाँस बाजार (बैम्बू मार्केट) की स्थापना की गयी है।

### राज्य आपदा प्रबंधन

- किसान भाईयों फसलों एवं स्वयं की सुरक्षा हेतु कृषि एवं मौसम आधारित परामर्श रेडियो सुने, टीवी देखें, स्थानीय मौसम पूर्वानुमान के लिए समाचार पत्र पढ़ें ताकि शीतलहर की स्थितियों की जानकारी होती रहे।
- कोहरे में लोग और जानवर अचानक सामने आ जाते हैं अतः बचाव हेतु वाहन में लाइट और हॉर्न का सही उपयोग करें।

**नोट:-** क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट [upcar.up.gov.in](http://upcar.up.gov.in) पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल [upcar12@gmail.com](mailto:upcar12@gmail.com) पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

22  
(राजर्षि कुमार गौड़)  
उप महानिदेशक

**प्रतिलिपि: उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।**

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. शासन को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेंगे।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।

36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
47. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।



(विनोद कुमार तिवारी)

प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राफ वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की  
बीसवीं बैठक दिनांक 08 जनवरी, 2026 की उपस्थिति

1. डा. ए.के. सिंह, सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ
4. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
5. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
6. डा. सोमवीर सिंह, सह प्राध्यापक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. डा. गौरव वार्ष्णेय, संयुक्त निदेशक, वन विभाग, लखनऊ।
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
9. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
10. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राफ रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ (ऑनलाइन)।
12. डा. एस.एन. पाण्डेय, पूर्व मौसम वैज्ञानिक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
13. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
14. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
15. डा. पी.के.शुक्ला, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (ऑनलाइन)।
16. डा. जे. जार्बेन, सह प्राध्यापक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (ऑनलाइन)।
17. श्रीमती सीमा, ज्येष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, लखनऊ।
18. श्री सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
19. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
20. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
21. डा. विनोद सिंह, पूर्व गोहूँ प्रजनक, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
22. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
23. श्री प्रेमचंद चौरसिया, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
24. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राफ वेदर वाँच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
25. श्री अजय सिंह, प्राविधिक सहायक कृषि विभाग, लखनऊ।
26. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
27. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।